I J R S S I S, Spl Issue (III), July-2020 : 279-283
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
OPEN ACCESS
e-ISSN 2347 – 8268 & 2347-8209 (P)
Original Article

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES
© VMS RESEARCH FOUNDATION www.ijrssis.in

कोविड – 19 लॉकडाउन कालमे लोकसंगीत कलाकारो पर परिणाम

V. R. Deshmukh
J.D. Patil Sangludkar Mahavidyalaya, Daryapur, Amravati.
*Corresponding Author: vrushalideshmukhar6@gmail.com

सारांश :

कोरोना संकट से निपटने के लिए लागू किए गए लॉकडाउन के अनेक दृष्परिणाम सामने आ रहे है । आज देश दुनिया की व्यापक आबादी कोरोना जनित संकट का सामना कर रही है। साथ ही वह भविष्य मे उभर कर सामने आने वाली अनेक आशंकाओ के बारे में भी चिंतीत है । हालांकी लॉकडाउन के इस दौर में भी कई सकारात्मक पहलू भी दुनिया के सामने उभरकर आए है।

दरअसल लॉकडाउन पूरी दुनिया में सामाजिक बदलाव का काम करने जा रहा है। इस संकट से उबर कर जो नई दुनिया हमारे सामने होगी वह बहुत बदली–बदली नजर आएगी वौश्विक इतिहास में वह चौथी दुनिया होगी और जो पहले से कही अधिक संवेदनशील, सृजनशील व अधिक स्वास्थ साक्षरता रखनेवाली होगी वास्तवमें लॉकडाउन के समय दिखने वाली लोगों की तरह–तरह की सक्रियताएं इस बात का आभास दे रही है कि लोग बदल रहे है। इस बात की भी ग्वाही मिल रही है कि इस तरह की सक्रियताएं अधिकांशतः सकारात्मक है और भविष्य मे यदी ये बनी रह गई तो 21 वी सदी के तिसरे दशकमे हम नए तरह के समाज से रूबरू होंगे।

उद्देश :

दुनिया भर के देश पिछले तीन महिनों से कोरोना के संकट काल से जुझ रहे है। लगभग सभी देशो कि अर्थव्यवस्था लगातार गिर रही है। ऐसे मे भारत जैसे विकासशील देश के सामने और भी ज्यादा संकट है। अधिकतर लोक कलाकारों की रोजी रोटी रोज के कार्यक्रम पर निर्भर है पर इस लॉकडाउन ने लोगो की लाईफ स्टाईल बदलकर रखी है। इस लॉकड का संगीत कलाकारोपर क्या परिणाम हुआ और इसके क्या फायदे तोटे है इसके लिये क्या करना चाहिये यही उद्देश इस विषय का है।

परिकल्पना/गृहीतके : संगीत कलाकारोने इस लॉकडाउन काल में इंटरनेट और सोशल मिडिया के माध्यम से अपनी कला का प्रदर्शन करके प्रसिध्दी और कला के प्रति सजगता प्रधान कर सकते है और अर्थाजन भी प्राप्त कर सकते है। जो कलाकार संगीत के टयुशनपर अपनी उपजिवीका चलाते है वे इंटरनेट के व्दारा अपनी टयुशन ले सकते है। आज घर घर मे नेट की सुविधा उपलब्ध है हर एक के पास या घर मे स्मार्ट फोन है जिसकी माध्यमसे बच्चों को सिखा सकते है।

प्रस्तावना :

आधुनिक परिवेश में सांस्कृतिक मुल्यों को सहजने का यदि कार्य कोई कर रहा है तो वह कलाकार ही है। मनुष्य को मनुष्यता का पाठ पढाने वाली शिक्षा जिसमे त्याग, बलिदान और अनुशासन के आदर्श निहित है। यदी कही सुरक्षित है तो वह मात्र लोक कलाकारो मे ही है। लेकिन करोना महामारी के कारण देशभर मे कला क्षेत्र के लोग रोजी रोटी के लिए तरस गए है।

सन 1947 मे भारत की स्वतंत्रता के बाद संगीत को नई दिशा मिली। रियासतों का विलय हो गया तब सरकार ने संगीत को सरंक्षण दिया। संगीत के प्रोत्साहन के लिए 1952 में राष्ट्पती पदक शुरू किया गया।सन 1953 में संगीत नाटक अकादमी तथ सन 1954 में ललित कला अकादमी की स्थापना हुए। संगीत के उत्थान के लिए आकाशवाणी ने संगीत का राष्ट्रीय कार्यक्रम सन 1952 से प्रसारित करना शुरू किया। इसके अतिरिक्त संगीत अब एक विषय के रूप में पढाया जा रहा है। जिससे शास्त्रीय संगीत को सर्वसाधारण तक पहुंचाया जा सकता है। अनेक पुस्तके आदी भी संगीत के विकास मे सहाय्यक सिध्द हुई है। भारतीय संगीत का संबंध मानव ने चरित्र, धर्म, साहित्य, संस्कृती तथा कला व जीवन के समस्त उपकरणो से है। साथ ही संगीत तथा कला ने मानव को कभी कर्म से दूर नही किया। अब भारतीय संगीत श्रेष्ठ है तथा उसका इतिहास अनेक विविधताओं से भरपूर है। पर आज लोक कलाकारों पर कोरोना वायरस महामारी की दोहरी गाज गिरी है जिसकी चपेट में आने से उनकी कला के कद्रदान तो छिन ही, साथ ही अपने फन के दम पर पेट पालनेवाले इन कलाकारों के सामने उदर पोषण का संकट भी गहरा गया है। दुनिया भर मे लोगों को घरो की चार दिवारी में कैद करनेवाली कोरोना वायरस महामारी ने जीवन से गीत, संगीत खेलकूद सभी कुछ मानो छिन लिया है। ऐसे मे मानवीय संवेदनाओ की भुमिका निभा रहे है और कुछ कलाकारोंकी व्यथा तो और भी गहरी है।

कोरोना की वैश्विक आपदा ने प्रदर्शनकारी कलाओं मे जिस तरह के असर डाले है उसके परिणम भयावह हो सकते है। सरकार चाहकर भी इस संकट से बच नही पाएगी इस कलाओं से जुडे कलाकार को आर्थिक मदत भी सरकार अगर करने घर जाए तो इनके विस्तार और मनमें नया प्रयोग करने पर भी असर पडेगा कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि आनेवाला समय भिन्न विभगों के साथ भारत की समृध्द प्रदर्शनकारी कलाओं पर भी गहरा असर डालेगा। फिल्म निर्माण से लेकर मुर्ती, संगीत और चित्रकला की प्रदर्शनी तक में दर्शक कब जुटेंगे इस पर अभी संकट रहेगा। हमे सोचने की जरूरत है कि कोरोना के संकट काल से हम कैसे निपटेंगे ? यह यूही हम अपनी कलाओं को इसी महामारी के साथ दफन करने की तो नही सोच रहे है ?

सुप्रसिध्द संगीत विशेषज्ञ एवं दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग से सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. मुकेश गर्ग ने कहा कि इस लॉकडाउन से संगीत से जुडे करीब एक लाख छोटे कलाकारों के लिए आजीविकाका सवाल खडा हो गया है। क्योंकी लॉकडाउन के कारण पिछले करीब तीन महिने में देश भर में संगीत का एक भी कार्यक्रम आयोजित नही किया जा सका और मोहल्ले में संगीत सिखाने के जितने स्कुल खुले हुए थे वे सब पुरी तरह बंद हो गए है तथा जो कलाकार संगीत की टयुशन पर अपनी उपजीविका चलाते थे उनके लिए भी जीना मुहाल हो गया है।

लॉकडाउन का संगीत कलाकारोपर परिणाम :

डिजीटल प्लॅटफॉर्म्स के माध्यमसे वर्चुअल कंसर्ट से एक तरफ जहां पुरी दुनिया के लोग एक साथ अपने पसंदिदा कलाकारों को देख सकते है। वही कलाकारों को भी घर बैठे दुनिया भर के प्रशंसको से जुडने का मौका मिलता है।

रोजीरोटी की भाग दौड के बीच पहले जहां संगीत अभ्यास के लिये पर्याप्त समय नही मिल पाता था। वही अब लगभग तीन माहसे चल रहे लॉकडाउन के चलते युवा कलाकार घरों मे अपना अधिकतर समय अपने संगीत रियाज मे बिता रहे है।

प्राचिन काल मे संगीत शिक्षण गुरू का शिष्य को विद्यादान करना और शिष्य व्दारा शिक्षा ग्रहण करने की परंपरा ही शिक्षा का मुख्य उद्देश था। इस प्रकार विद्या की परंपरा उत्तरोत्तर आगे बढती रही। प्राचीन कला से आधुनिक काल तक चली आ रही है। पहले गुरूमुखी परंपरा थी सबकुछ गुरू पर ही निर्भर करता था। गीतो की नोटेशन लिखने की कोई प्रणाली नही थी यदि शिष्य गुरू व्दारा याद कराया पाठ भूल जाता तो पुनः याद कराने पर कोई तरीका नही था शिष्य अपने गुरू से अपनी और से कुछ नही पुछ सकता था। गुरू गृह रहकर शिष्या लेनी पडती थी अक्सर गुरू शिष्यों को शिक्षा अपने मुड से देते थे। पर आज इंटरनेट के माध्यम से शिष्य को अपने घर पर रहकर अपने मुढ से जब चाहे तब अपनी पसंदीदार कलाकारों को गुरू से युटयुब के माध्यमसे घर बैठे विद्या ले सकते है।

आज अनेक मोठे कलाकारोकी उनके विविध रागों की सिडीज, कॅसेट्स मार्केट मे उपलब्ध है। इंटरनेट, युटयुब के माध्यम से घर बैठे विद्यार्थी शिक्षा ले सकता है। कुछ साल पहले आज के जैसी स्थिती कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन होता तो हमारे लिए कठीन था। पर आज इंटरनेट के माध्यम से गुरू शिष्य को घर बैठे सिखा सकते है। और आज नेटपर उपलब्ध है। इसलिए विद्यार्थीयों को ज्यादा शिकायते नही आती।

घर से कार्य करने की जो प्रेरणा सरकार की और से दी गई है, युवा कलाकार उसका पूर्णता पालन करते हुए आधुनिक संसाधनो का इस्तमाल कर अपने गुरूजनों से शिक्षा ले रहे है और अपनी कला को निखार रहे है। गुरूजन शहर के विभिन्न हिस्सो के अपने शिष्यों की ऑनलाईन क्लास ले रहे है।

लॉकडाउन ने लोगों की लाईफस्टाईल को बदलकर रख दिया है। कुछ लोग इसे सकारात्मक रूप से लेते हुए अपनी दिनचर्या का व्यवस्थित कर इसे खुशनुमा बना रहे है। उनका 24 घंटो का पूरा शेडयूल तैयार है। इसमें वह योग और व्यायाम के साथ ही संगीत प्रेमियों की जो इसके माध्यम से तनाव मुक्त हो रहे है।

स्कुल के कुछ ऐसे छात्र है। यह गृप समुह गान से अन्य छात्रों को प्रेरीत कर रहे है कि कैसे लॉकडाउन में हम संगीत के एक–दुसरे से जुडकर अपने तनाव को भगाने में कामयाब हो सकते है। इस तरह की तकनीक से बच्चे अपने घरों मे बेहतर समय बिता रहे है।

लोक आज अधिक सृजनशील होते जा रहे है, कह तो यहभी सकते हैं कि लॉकडाउन का फायदा उठाते हुए अपने भीतर की सृजनशीलता को बाहर लाने और उसे मांजने का काम बहुत शिद्दत के साथ होता नजर आ रहा है। यह समय शिक्षा, कला तकनीकी सोच–विचार मे नए नए प्रयोग करने का बनता जा रहा है। इस काम से युवाओ के साथ साथ किशोरों और बच्चो की फौज का आते दिखना बहुत कुछ बदलती दुनिया का आभास दे रहे है।

दुनिया भर के लागों को अपनी कलाओं और हुनर से जागरूक करने वाले लोग अपने अधिकारों के लिए आगे नही आये। उन्होंने अपने आप ही सब कुछ ठिक होने में संतृष्टी समझी लेकिन उनको क्या पता था कि ये दौर बहुत लंबा चलेगा परिणाम स्वरूप मात्र उनके पास काम नही है।

देश मे करीब दस हजार संगितकार होंगे जो किसी बडे कलाकारो के साथ तबला हारर्मोनियम, पखवाज आदि बजाते है उनकी रोजी रोटी भी खतरे में पड गई है।

संगीत पर कई ऑनलाईन वेबिनार और कार्यक्रम होने लगे है। जिससे संगीत पर गंभीर विचार विमर्श शुरू हो गया है। अन्यथा पहले संगीत के बारे मे देश में कोई विचार विमर्श नही होता था।

लॉकडाउन के चलते इन लोकगायकों और लोक कलाकारों का तीन माह से काम बंद है। कोरोना वायरस की महामारी से जंग मे लॉकडाउन लगा तो धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में लोकगीत और संगीत पेश कर लोगों को अपनी संस्कृतीसे जोडनेवाले इन लोक कलाकारों के कार्यक्रम भी बंद हो गए है। ये इस समय बेरोजगार है।

लॉकडाउन के कारण नवरात्र, रामनवमी के उत्सव, हनुमान जयंती और इस उपलब्ध मे 95 वर्ष से प्रति वर्ष आयोजित किए जाने वाले संकट मोचन संगीत समारोह जैसे अनेक परंपरागत कार्यक्रम सांगितिक–सांस्कृतिक गतिविधीया मंद पडी है।

उपाय योजना :

पर्यटन विभाग की प्रमुख शासन सचिव श्रेया गुहा ने बताया की कोरोना जैसी आपदा से उत्पन्न चुनौतियों का रचनात्मक रूप से मुकाबला करते हुए काम करने के नए नए तरीके इजाद करने होगे लॉकडाउन तथा सोशल डिस्टेंसिंग होने की वजह से साल के अंत तक ईव्हेंट और कंसर्ट आयोजित करना संभव नही है। लेकिन डिजिटल इव्हेंट और कंसर्ट आयोजित किए जा सकते है। इसीकडी मे राजस्थान के पारंपारीक लोक कलाकारों के लिए मुख्यमंत्री लोक कलाकार प्रोत्साहन योजना जैसी स्किम लागू कि गई। इसमें कलाकारों ने सोशल मिडिया पर अपनी उमदा पेशकश भेजी, जिनको विभाग के युटयुब चैनल पर प्रसारीत किया गया। इसके माध्यम से अधिकतम लोक कलाकारों को वित्तीय सहायता पहूचाई गई। इसके अलावा संगीतके क्षेत्रो मे ऑनलाईन कंसर्ट भी आयोजित किए गए। कलाकारों की कला डिजीटल प्लॅटफार्म पर प्रोत्साहित कर सहाय्यता देने के साथ साथ 15

दिवसीय कला कॅम्प आयोजित कर कलाकृतियों की ऑनलाईन प्रदर्शनी आयोजित की गई कोरोना वायरस के खिलाफ जंग में कोरोना योध्दाओं के प्रति एकजुटता दिखाने और संकट के इस घडी मे माहौल को थोडा खुशनुमा बनाने के लिए बॉलिवुड जगत के तमाम दिग्गज सामने आए है। देश को संगीत की तारों से जोडने के लिए तीन दिनों तक गायकों की वर्चुअल महफिल सजी है, जिस मे सभी सिंगर्स अपनी आवाज से लोगो का न सिर्फ मनोरंजन कर रहे है। बल्की देश कोरोना वीरोको सलाम भी कर रहे है।

वर्चुअल कंसर्ट दौरान कई बार कलाकार नए कलाकारों को भी अपने साथ परफॉर्म करने का मौका है। इससे कलाकारकी लोकप्रियता बढाने के साथ संगीत क्षेत्र मे इच्छुक युवाओं को भी फायदा हो रहा है। कही ऑनलाईन संगीत, नृत्य, वाद्य, कला की स्पर्धा युवा वर्ग सहभाग ले रहा है।

सरकार को कलाकारों की मॉगे :

गायक कलाकार कहते है कि जिस तरह सरकाने अन्य वर्ग के लिए राहत पैकेज जारी किये है, वैसे ही लोक गायकों और लोक कलाकारों के लिए कुछ करे जीस तरह मॉल, रेस्टॉरंट और धार्मिक स्थल खोलने की अनुमती दे दी गई है वैसे ही हम 50 से 100 श्रोताओं के साथकार्यक्रम करने की अनुमती दी जाए और लोक कलाकारो के भविष्य के लिए कोई कदम उठाना चाहिए।

गाव देहात तक इंटरनेट की सुविधा सर्व सामान्य कलाकारो के लिए मापक दरोमे करनी चाहिए ।

निष्कर्ष :

कुछ ऐसे कलाकार है जैसे की लोक ज्यादातर पढे लिखे नहीं होने के कारण सोशल मिडीया की शरण भी नही ले सकते। देश मे कई विश्वविद्यालय इस पर गहन अध्ययन और शोध कर चुके है। साथ ही यह भी निष्कर्ष के रूप मे निकाल चुके है कि इन प्रदर्शनकाली कलाओं का इस सदी मे खत्म सा होना भी हमारी और सरकारकी कमी है। प्रदर्शनकारी कलाओ मे अभिव्यक्त समाज और संस्कृती का गहरा असर दर्शकोपर पडा है।

स्वास्थ सुविधाए और रोजगार का संकट अखबार के किसी न किसी पन्ने में आपको पढने को मिल ही जाएगा ऐसे मे वह कोरोना महामारी से लडने के साथ इनसे कैसे निपटेगा यह सवाल सहभाग हर भारतीय इन दिनो घरोमें लॉकडाउन के साथ सोच ही रहा होगा। यह वक्त बेहतर खोजने का है, जरूरी भी है देश के जिम्मेदार नागरिक इस पर सोच और इसके हल निकालने मे सरकारकी मदत करे हालाकी इस पर आखरी फैसला सरकारका होगा। लेकिन यहा मैजुद समय मे जो आगे संकट होने वाला है इस पर सोचने की सबसे ज्यादा जरूरत है।

संदर्भ सुची :

डॉ. मृत्युंजय शर्मा – संगीत मैनुअल एच.जी.
पब्लीकेशन नईदिल्ली पृ.क्र. 167, 168
www.livehindustan.com
तृप्त कपुर – उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा
हरमन पब्लीशिंग हाउस नई दिल्ली पृ.क्र. 31, 38
Form Jagran.com